पाठ-15: अनुराधा

मूल कथ्य

श्री पंकज कुमार की एक विशिष्ट कहानी जिसमें एक ऐसे स्त्री की कहानी जिसका पति एड्स से पीड़ित है। उसकी परिवार और समाज में उपेक्षा का चित्रण। साथ ही, समाज व परिवार में स्त्री की भूमिका और उसके संघर्ष की कहानी है। 'अनुराधा' कहानी में नारी-मन की अंतर्व्यथा का चित्रण है। परिवार में एक एड्स रोगी के होने से संबंधियों, माता-पिता, भाई-पत्नी आदि पर भी प्रभाव पड़ता है।एड्स रोगियों की समयपूर्वक जाँच तथा सावधानी, समाज को इसके भयावह रूप से बचा सकती है।

सारांश

- अनुराधा के चिंतन - मनन से कहानी का प्रारंभ । एक नारी के द्वारा अधिकार बोध को दर्शाया गया है।
- स्त्री और पुरुष के प्रति अलग-अलग धारणाओं के प्रति आक्रोश दिखाई देता है और बराबरी का भाव प्रकट हुआ है ।
- अनुराधा के जीवन के प्रति दृष्टि और अद्भुत संघर्ष क्षमता का निरूपण ।
- अनुराधा के जीवन में अनेक मोड़ आते हैं ---
- कम उम्र में विवाह, नौकरी न कर पाने की स्थिति , बच्चा न होने की वजह से घर के लोगों के व्यवहार में परिवर्तन, पति को एचआईवी पॉजिटिव होने पर घर द्वारा तिरस्कार, हमेशा झुकाने की कोशिशइसके बावजूद अनुराधा अधिक संयमित और पति की सेवा में तत्पर ।
- पति के देहांत के बाद शहर जाकर इलाज कराती है ।

कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षा

- कहानी का प्रारंभ होता है, उसकी नायिका के चिंतन-मनन से, जहाँ जीवन के वास्तविक संदर्भों में 'अधिकार' का अर्थ खोजने का प्रयास करती है। वह शहर में पली-बड़ी एक सामान्य मध्यमवर्गीय नारी थी जिसने ललित-कला में बी.ए. किया था। वह उसी विषय में अपना कैरियर बनाना तथा प्रसिद्धि पाना चाहती थी परंतु माता-पिता की इच्छानुसार शीघ्र ही उसे विवाह के बंधन में बँधना पड़ा। उसके पति नौकरी तो शहर में करते थे परंतु रहते गाँव में थे, इसी कारण वह भी विवाह के पश्चात गाँव में रहने लगी। सामाजिक सोच के अनुसार उसका पति कमा रहा था तो काम करने की उसे क्या आवश्यकता थी?
- विवाह के प्रारंभिक दिनों में अनुराधा को कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई परंतु दो वर्ष तक जब वह माँ नहीं बन पाई तो उसकी सास के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा।
- बाद में जब अनुराधा की माँ बनने की चाहत को विजय ने हँसकर टाला और वह बीमार भी रहने लगा तो जाँच हुई और ज्ञात हुआ कि विजय एच.आई.वी. पाजिटिव है। डाक्टर की अन्य हिदायतों के साथ अनुराधा को पति से दूर रहने की विशेष सावधानी भी शामिल थी।
- विजय के रोग के संक्रमण के भय से उसका छोटा भाई 'अजय' भयभीत होकर घर छोड़ गया तथा अन्य रिश्तेदार यहाँ तक कि विजय के माता-पिता भी उचित जानकारी के अभाव में डरकर यथासंभव उससे दूर रहने लगे।
- कहानी में अनुराधा को भय से आक्रांत दिखाया गया है। परंतु संस्कारों और सामाजिक मर्यादाओं से बँधी वह वहीं रहने तथा वही करने को मजबूर हो गई तथा वह डाक्टर की चेतावनी की अवहेलना कर विजय के कमरे में ही सोती रही, ताकि विजय एकाकी महसूस न करें, मृत्यु से पहले और अधिक कष्ट का अनुभव न करें।
- इसी प्रकार स्वयं से संघर्ष करते अनुराधा के दिन बीतते रहे और उसके पति की बीमारी बढ़ती गई। अंततः वह घड़ी भी आ पहुँची, जिसका पता सबको

था। उसने प्राण त्याग दिए। अगले दिन उसके पति का अंतिम संस्कार कर दिया ।

- अनुराधा गर्भवती है, यह जानकर भी उसके सास-ससुर अनुराधा के स्वास्थ्य की जाँच करवाने को तैयार नहीं होते।
- विजय की बीमारी के दौरान घर की आर्थिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी परंतु बाद में बीमा कंपनी तथा दफ़्तर आदि से कठिनाई से प्राप्त राशि से हालात में सुधार आने की संभावना बन गई थी। यह राशि सिर्फ़ अनुराधा के हस्ताक्षर के बाद ही प्राप्त हो सकती थी, यह जानकर उसकी सास को अच्छा नहीं लगा था।
- अनुराधा मनोवेगों पर नियंत्राण रखते-रखते स्वयं ही जूझ रही थी। वह जानने को बेचैन थी कि कहीं वह रोगग्रस्त तो नहीं! यदि वह रोगग्रस्त है तो क्या आनेवाला बच्चा भी संक्रमित होगा या नहीं? वह किसी के साथ इन समस्याओं को बाँट नहीं पा रही थी, परिणामस्वरूप उसके व्यवहार में भी चिड़चिड़ापन आ गया था।
- उसने दृढ़ निश्चय किया कि उसे अब अपने अतीत, रोग, भय आदि से मुक्त होना ही होगा। सारी शक्ति बटोरकर, ठोस निर्णय लेकर अगले दिन वह ससुर के सम्मुख जा खड़ी हुई और साहस के साथ अपने चेकअप कराने की मंशा जाहिर की। उसने विद्रोहात्मक स्वर में अपने इलाज, पैसे, चेकबुक, पासबुक की माँग की तथा यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह उन पर निर्भर न रहकर स्वयं तसल्ली से अपना इलाज कराएगी।
- अनुराधा ने तुरंत ही शहर जाने का निर्णय कर लिया। अनुराधा के एक ठोस निर्णय ने अब उसके समक्ष आनेवाली सारी बाधाओं को छोटा कर दिया था, इसीलिए वह अकेली ही अजय का घर ढूँढ़कर उसके पास पहुँच गई और देवरानी करुणा ने भी उसे संबल दिया तथा उसका बाहर निकलना उचित माना।
- जीवन युद्धभूमि, कर्मभूमि है तथा अनुराधा उसमें संघर्ष के लिए तत्पर। वह जीने के लिए, अधिकारों के लिए, स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने को कटिबद्ध है। इस मार्ग में अब कोई बाधा उसे रोक नहीं पाएगी। संस्कार, मोह तथा संबंध आदि से ऊपर उठकर, यहाँ तक कि आवश्यक हुआ तो शालीनता को भी त्यागकर वह अनवरत इस जीवन-संघर्ष में जुटी रहेगी।
- इस कहानी का अंत वास्तव में नारी के अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष की शुरूआत है। यहाँ अनुराधा के जीवन में एक नया मोड़ आता है, जहाँ से वह स्वयं के लिए जीवन जीने का संकल्प लेती है।

भाषा-शैली

- इसमें चिंतन प्रधान शैली प्रमुख है। नारी-मन की अंतर्व्यथा का वर्णन करते हुए।
- मनोविश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है। प्रश्नात्मक शैली के माध्यम से समाज के सामने प्रश्नों की झड़ी-सी लगा देते हैं। व्यंग्य शैली।
- इस कहानी में वाक्य-संरचना सरल तथा आम बोलचाल की है जिसमें भावानुरूप तद्भव देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द आए हैं।
- कहानी का उद्देश्य - नारी के जीवन की समस्याओं को उभारने वाली कथा
- दकियानूसी परंपरा का विरोध, नारी शक्ति की प्रतीक अनुराधा ।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- आपको कथा में अनुराधा के अतिरिक्त कौन-सा पात्र सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?
- "डरकर ही आज मैं अपने समस्त भयों से मुक्त हो चुकी हूँ।" अनुराधा ने
- ऐसा क्यों कहा?
- अनुराधा के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ उदाहरण सहित सिद्ध करते हुए लिखिए।
- विजय को अधिक समय तक जीवित रखने के लिए परिवार को क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए थीं।